शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अलीगढ़ जनपद में विद्रोह का व्यापक स्वरूप

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा
प्रोफेसर, इतिहास
महात्मा गोपालाराम महाविद्यालय
अन्ता, बांरा, राजस्थान, भारत

शोध सारांश

अलीगढ़ जनपद में विद्रोह की असफलता के कारण - सरकार ने अलीगढ़ के विद्रोह का कठोरतापूर्वक दमन किया था जिसके कारण विद्रोहियों को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। अलीगढ़ में विद्रोह की आग पूरे जनपद में अत्यन्त तीव्रगति से फैली थी। इसके बाबजूद विद्रोह सफल नहीं हो सका, यह एक विचारणीय विषय है।

कूट शब्द - *जनपद, विद्रोह, खजाना, सुयोग्य, प्रशासन*

प्रस्तावना

20 मई, 1857 की शाम को नारायण नामक ब्राह्मण जमींदार को सार्वजनिक रूप से दी गई फांसी की घटना ने अलीगढ़ जनपद में विद्रोह का विस्फोट कर दिया। इस घटना की प्रतिक्रियास्वरूप नौ नम्बर देशी पलटन के सैनिकों ने उत्तेजित होकर अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का विगुल बना दिया और ब्रिटिश शासन के सभी पूर्वानुमानों को ध्वस्त कर दिया। इस घटना के पश्चात् अलीगढ़ जनपद के सभी क्षेत्रों में विद्रोह का स्वरूप दिन प्रतिदिन अधिक व्यापक होता गया। अलीगढ़ जनपद में 1857 के विद्रोह के प्रसार से सम्बन्धित प्रमुख घटनायें निम्नलिखित थीं :

अलीगढ़ कारागार का विध्वंस-अलीगढ़ नगर में विद्रोह का विस्फोट होते ही विद्रोहियों ने सर्वप्रथम अलीगढ़ कारागार को अपना निशाना बनाया था। उन्होने कारगार में कार्यरत् रक्षकों के सहयोग से जेल के फाटक को तोड़ दिया। इस कार्य में जेल के प्रहरियों ने विद्रोहियों को पूरा सहयोग प्रदान किया था। जेल के सभी बन्दियों को मुक्त करा मुक्त होते ही सभी बन्दी अविलम्ब विद्रोहियों से जाकर मिल गये जिसके फलस्वरूप विद्रोहियों की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हो गई। अलीगढ़ कारागार के विध्वंस के समय जेल के पास विद्रोहियों ने बड़ी संख्या में बैलगाड़ियों को खड़ा कर लिया था जिनमें सरकारी खजाना तथा अंग्रेज अधिकारियों के घरों से लूटा गया सामान भरा हुआ था। इस कार्य में अंग्रेज अधिकारियों के डाक बंगला का खानसामा रसूल खॉं तथा कोचवान मीर खॉं ने सक्रिय भूमिका निभाई थी तथा विद्रोहियों को पूर्ण सहयोग प्रदान किया था।

अध्ययन का क्षेत्र

अलीगढ़ नगर से अंग्रेजों का पलायन-अलीगढ़ नगर में विद्रोह का विस्फोट जाने तथा विद्रोहियों द्वारा अंग्रेजों के घरों को जलाने व उनकी सम्पत्ति लूटने की घटना के पश्चात् अंग्रेजों के समक्ष प्रमुख समस्या यह थी कि जिन अंग्रेज अधिकारियों और उनके परिवारीजनों को विद्रोहियों ने जीवित छोड़ दिया था, उन्हें किस

प्रकार सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया जाय। यद्यपि विद्रोहियों का विशाल समूह दिल्ली की ओर रवाना हो चुका था, फिर भी अलीगढ़ के अंग्रेज अधिकारी इतने अधिक भयभीत हो गए थे कि वे शीघ्रातिशीघ्र अलीगढ़ छोड़कर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचना चाहते थे। अंग्रेजी शासन की ओर से इन अधिकारियों के जीवन की सुरक्षा करने तथा उन्हें किसी सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने की जिम्मेदारी एक नम्बर ग्वालियर पलटन के घुड़सवार सैनिकों की एक टुकड़ी को सौंपी गई। इस सैनिक टुकड़ी ने उन अंग्रेज अधिकारियों और उनके परिवारजनों को सुरक्षित हाथरस तक पहुंचा दिया।

यद्यपि ग्वालियर सैनिक टुकड़ी के सहयोग से सभी अंग्रेज अधिकारी अलीगढ नगर से बाहर चले गए थे, तथापि दो अंग्रेज लिपिक मि. कोनर तथा मि)क्लाइन अपने परिवारीजनों के साथ अलीगढ़ से बाहर नहीं जा सके। 22 मई की रात को कुछ विद्रोहियों ने उन दोनों लिपिकों के घरों पर आक्रमण कर दिया, किन्तु इससे पूर्व उन्हें आक्रमण का आभास हो गया और वे वहाँ से भाग निकले। काफी प्रयास करने के पश्चात् उन्होंने सासनी-1 के निकट सवामई नामक स्थान पर शरण ले ली। मार्ग में उनकी भेंट नील की खेती करने वाले अंग्रेज कृषक निचटर लेन के परिवार से भी हुई थी। निचटरलेन के पुत्र को कुछ समय पूर्व विद्रोहियों ने मौत के घाट उतार दिया था। इस प्रकार ये तीनों अंग्रेज परिवार चार-पाँच दिन तक सवामई में ठहरे थे। इसके पश्चात् इन लोगों को सासनी के पन्नालाल नामक साहूकार ने अपने यहॉ शरण दे दी। इतना ही नहीं, इन तीनों अंग्रेज परिवारों को सुरक्षित हाथरस तक पहुँचाने में भी पन्नालाल ने पर्याप्त सहयोग प्रदान किया था।

अलीगढ़ जनपद मुख्यालय पर विद्रोह का समाचार 12 मई, 1857 को उस समय अलीगढ़ छावनी में नो नम्बर देशी पलटन की चार कम्पनियों पहुंचा था। तैनात थीं। नो नम्बर रेजीमेण्ट को उस समय भारत की सर्वश्रेष्ठ रेजीमेण्ट समझा जाता था, जिसका नेतृत्व मेजर एल्ड नामक सुयोग्य अंग्रेज सैन्य अधिकारी के हाथों में था। अलीगढ़ के तत्कालीन जिलाधीश मि. वाट्सन ने अपने सैनिकों को विद्रोह के प्रभाव से अलग रखने का पूरा प्रयास किया, किन्तु अन्य जनपदों में विद्रोह के विस्फोट का समाचार प्राप्त हो जाने के कारण अलीगढ़ की सैनिक छावनी के सैनिकों पर भी उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

17 मई, 1857 को कुछ अज्ञात लोगों द्वारा छावनी क्षेत्र में स्थित एक अंग्रेज अधिकारी के बंगले को जलाये जाने की घटना से अलीगढ़ जनपद का प्रशासन सचेत हो गया। इस घटना के सम्बन्ध में कुछ सैनिकों द्वारा दी गई सूचना के आधार पर 19 मई को नारायण नामक ब्राह्मण जमींदार को बन्दी बना लिया गया और छावनी के मैदान में उपस्थित सैनिकों के विशाल समूह के समक्ष उस ब्राह्मण जमींदार को सार्वजनिक रूप से फॉसी दे दी गई। इस दृश्य को देखकर नौ नम्बर देशी पलटन के सैनिकों ने अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध 20 मई, 1857 को विद्रोह कर दिया। अलीगढ़ जनपद में विद्रोह का विस्फोट हो गया 4 इस प्रकार वर्ष 1857 के अन्त तक अलीगढ़ जनपद में विद्रोह का स्वरूप अत्यन्त उग्र और व्यापक हो गया था। यद्यपि इस विद्रोह का प्रारम्भ सैनिकों ने किया था, तथापि विद्रोह के प्रारम्भ होने के पश्चात् अलीगढ़ जनपद की जनता और जन नेता भी इसमें सक्रिय रूप से सम्मिलित हो गए थे। उनकी उग्र

और हिंसक गतिविधियों ने सरकार के सम्मुख गम्भीर चुनौती तथा अनेकों समस्यायें उत्पन्न कर दी थीं। विद्रोह के उग्र और व्यापक स्वरूप को देखकर अलीगढ़ जनपद के तत्कालीन जिलाधीश मि. वाट्सन को जिला मुख्यालय छोड़कर भागना पड़ा और उसे अपने जीवन की सुरक्षा के लिए आगरा में शरण लेनी पड़ी।

नवम्बर, 1857 के पश्चात् अंग्रेजों ने अलीगढ़ जनपद के हाथरस, खेर, मंडराक, इगलास अकराबाद, अतरौली सिकन्दराराऊ आदि विभिन्न क्षेत्रों में सैनिक बल के द्वारा विद्रोह के दमन का प्रयास किया। लगभग एक वर्ष तक निरन्तर संघर्ष करने के पश्चात् नवम्बर 1858 में सरकार को अलीगढ़ जनपद के विद्रोह का दमन करने में सफलता प्राप्त हो सकी थी।

तथ्य प्रस्तुती

हाथरस

अलीगढ़ जनपद का प्रमुख नगर हाथरस 1857 के विद्रोह की लपटों से अछूता नहीं रहा था। इस स्थान पर 20 मई की रात को ही विद्रोही सक्रिय हो गये थे। विद्रोहियों ने सैनिक छावनी क्षेत्र में बने हुए अंग्रेज अधिकारियों के कई बंगलों को जलाकर राख के ढेर में परिवर्तित कर दिया था। अलीगढ़ में हुए विद्रोह का समाचार 21 मई को आगरा पहुँचा। वहाँ के जिलाधीश मि0 कॉल्विन ने कैप्टन अलैक्जैण्डर के नेतृत्व में एक नं. ग्वालियर रेजीमेण्ट के घुड़सवार सैनिकों की टुकड़ी को अलीगढ़ की ओर रवाना कर दिया। इस सैनिक टुकड़ी, जिसमें 233 घुड़सवार सैनिक थे, को हाथरस में रूकने और अंग्रेज अधिकारियों की सुरक्षा करने का निर्देश दिया गया था। कैप्टन अलेक्जेण्डर ने वह महत्वपूर्ण दायित्व लेफ्टीनेंट कॉकबर्न को सौंपा था। किन्तु अंग्रेजों के सभी पूर्वानुमानों को ध्वस्त करते हुए उस सैनिक टुकड़ी के 100 घुड़सवार सैनिकों ने 24 मई को सरकार की आशा के विपरीत अंग्रेजों के विरूद्ध अचानक विद्रोह कर दिया और वे स्थानीय विद्रोही नेताओं की खुले रूप से सहायता करने लगे।

हाथरस में ग्वालियर रेजीमेण्ट के घुड़सवार सैनिकों के अचानक विद्रोह करने के फलस्वरूप अंग्रेजों के समक्ष विषम परिस्थिति उत्पन्न हो गई। उस समय अलीगढ़ के जिलाधीश मि. वाट्सन तथा अन्य प्रमुख अधिकारी अलीगढ़ से भागकर हाथरस में ही शरण लिये हुए थे। किन्तु हाथरस में विद्रोह का विस्फोट होते ही इन अंग्रेज अधिकारियों के जीवन की सुरक्षा का गम्भीर प्रश्न खड़ा हो गया। इन सभी अधिकारियों ने बिना बिलम्ब किए हाथरस छोड़ दिया और विद्रोहियों की नजरों से छिपते हुए खन्दौली में जाकर शरण ली।

26 मई को आगरा से लेफ्टीनेंट डब्ल्यू०एच०ग्रेट के नेतृत्व में अंग्रेजों की सहायता करने के उद्देश्य से अतिशीघ्र खन्दौली पहुंचा दी गई। इस सैनिक टुकड़ी को सूचना प्राप्त हुई कि हाथरस में विद्रोहियों के भय से मि. बूथ, मि. साण्डर्स तथा कुछ अन्य अंग्रेज अधिकारी एक नील की फैक्ट्री में छिपे हुए थे तथा उनके जीवन को किसी भी क्षण खतरा हो सकता था। सूचना प्राप्त होते ही इस सैनिक टुकड़ी को 29 मई को प्रातः खन्दोली से हाथरस के लिए रवाना कर दिया गया। सैनिकों ने त्वरित कार्यवाही करते हुए हाथरस जाकर अपने अधिकारियों को मुक्त कराया इन अंग्रेज तथा इसी सैनिक टुकड़ी की सहायता से मि0वाट्सन को अलीगढ़ जनपद के प्रशासन का कार्यभार ग्रहण कराया गया था। वाट्सन 2 जुलाई, 1857 तक अलीगढ़ में अपने पद पर कार्य करता रहा। किन्तु इसके पश्चात् नीमच

E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2022

सेना के विद्रोहियों के आगरा की ओर बढ़ने तथा हाथरस व सासनी में तैनात ग्वालियर सेना की दो टुकड़ियों के विद्रोह करने की सूचना प्राप्त होते ही वाट्सन को पुनः अलीगढ़ छोड़ने को विवश होना पड़ा ।

29 मई, 1857 से 2 जुलाई, 1857 के मध्य की अवधि में मि. वाट्सन ने अलीगढ़ में रहकर सर्वप्रथम जिला मुख्यालय की डाक एवं संचार व्यवस्था को ठीक करने का प्रयास किया था। उसके इन प्रयासों के फलस्वरूप मेरठ तथा आगरा के साथ अलीगढ़ का सम्पर्क पुनः स्थापित करने में सफलता प्राप्त हो गई। इसके साथ-साथ वाट्सन ने सैनिक बल की सहायता से अलीगढ़ जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था स्थापित करने का भी प्रयास किया था। अंग्रेज अधिकारियों के समक्ष सबसे बड़ी समस्या यह थी कि अलीगढ़ नगर ग्राण्ड ट्रंक रोड पर स्थित होने के कारण विद्रोही सैनिकों की टुकड़ियाँ अलीगढ़ से होती हुई दिल्ली की ओर लगातार आती जाती रहती थीं। फलस्वरूप अंग्रेज अधिकारियों को उन दिनों विद्रोहियों की गतिविधियों से प्रतिरक्षण सतर्क और सचेत रहना पड़ता था।

इस प्रकार सम्पूर्ण अलीगढ़ जनपद और विशेष रूप से हाथरस के निकटवर्ती क्षेत्र में जून, 1857 के मध्य तक भय और आतंक का वातावरण बना रहा। अंग्रेज अधिकारियों को भयभीत और आतंकित अवस्था में जून माह का पूर्वार्द्ध व्यतीत करना पड़ा था। इसी वातावरण के अन्तर्गत दि. 5 जून, 1857 को दिल्ली की ओर जाती हुई सात नम्बर घुड़सवार सेना के विद्रोहियों ने अंग्रेजी सेना के हथियारों तथा अन्य सामग्री को गम्भीर क्षति पहुंचाई थी।

हाथरस के निकट स्थित सासनी के आसपास का क्षेत्र भी विद्रोह की आग से प्रभावित हुआ था। इस क्षेत्र में विद्रोह का दमन करने तथा विद्रोहियों पर नियंत्रण बनाये रखने के उद्देश्य से अंग्रेज शासकों ने ग्वालियर रेजीमेण्ट की एक सैनिक टुकड़ी को तैनात कर दिया था। किन्तु मई, 1857 के अन्त में इस सैनिक टुकड़ी के सैनिकों ने भी अंग्रेज सरकार के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया। जिस समय अंग्रेज अधिकारी विद्रोहियों के भय से अलीगढ़ से भागकर हाथरस चले गए थे, उस समय मि०कोनर तथा मि० क्लाइन नामक दो लिपिक अपने परिवारीजनों के साथ अलीगढ़ में ही रह गये थे। विद्रोहियों का दबाब अधिक बढ़ जाने पर दोनों लिपिक सपरिवार अलीगढ़ से निकल भाग तथा अपने प्राणों की रक्षा के लिए उन्होंने सासनी के निकट सवामई नामक स्थान पर शरण ली थी। अलीगढ़ से सासनी की ओर जाते समय मार्ग में उन दोनों लिपिकों की भेंट नील की फैक्ट्री के स्वामी मि. निचटरलेन तथा उनके परिवार से हुई थी। कुछ समय पूर्व उस क्षेत्र के विद्रोहियों ने आक्रमण करके निचटरलेन के पुत्र की हत्या कर दी थी। सासनी के एक सम्पन्न साहूकार पन्नालाल ने इन सभी अंग्रेजों की प्राणरक्षा की थी और उन्हें अपने स्तर पर सुरक्षा उपलब्ध कराके हाथरस तक पहुँचाया था।

खैर

खैर क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का विस्फोट और प्रसार उस क्षेत्र के चौहान राजपूत राव भोपाल सिंह के नेतृत्व में हुआ था। उन्होंने अपने वीरता पूर्ण कार्यों से खैर तथा निकटवर्ती क्षेत्र में कुछ समय के लिए विदेशी सत्ता को समाप्त कर दिया था। विद्रोह के प्रारम्भ होने पर इस क्षेत्र के विद्रोहियों ने राव भोपाल सिंह के नेतृत्व में खैर

तहसील के भवन पर आक्रमण किया। उन्होंने खैर के तहसीलदार को वहाँ से भगा दिया और तहसील के भवन पर अपना अधिकार कर लिया। किन्तु यह स्थिति अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकी। जब वाट्सन ने सेना के सहयोग से अलीगढ़ पर अधिकार कर लिया तो उसके पश्चात् उसने खैर तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र के विद्रोह को कुचलने के उद्देश्य से खैर पर आक्रमण कर दिया। राव भोपाल सिंह ने बड़ी वीरता के साथ अंग्रेजी सेना का सामना किया किन्तु अन्त में विद्रोहियों को पराजित होना पड़ा। राव भोपाल सिंह को बन्दी बना लिया गया तथा उसे फांसी दे दी गई।

1857 के विद्रोह के समय राव भोपाला सिंह अपने क्षेत्र का एक वह चौहान वंशीय राजपूत था। उसने अपने सहयोगियों तथा क्षेत्र लोकप्रिय शासक था। की जनता के सहयोग से विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुए कुछ समय के लिए खेर क्षेत्र में राजपूत शासन की स्थापना की थी तथा विदेशी सत्ता को समाप्त कर दिया था। अलीगढ़ से वाट्सन के पलायन करने के पश्चात् राव भोपाल सिंह ने खैर के तहसीलदार को हटाकर तहसील के भवन पर अपना अधिकार करके वहाँ स्वतंत्रता के प्रतीक झण्डे को फहराया था। किन्तु खैर क्षेत्र की स्वतंत्रता अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकी। मि. वाट्सन ने खैर पर आक्रमण करके राव भोपाल सिंह को बन्दी बना लिया और उसे मृत्यु दण्ड दे दिया।

जनश्रुति के अनुसार जब अंग्रेजी सेना राव भोपाल सिंह को बन्दी बनाकर ले जा रही थीं, तब मार्ग में उसे अत्यधिक प्यास लगी, किन्तु सैनिकों ने उसे पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं कराया। मार्ग में कुछ महिलायें पानी भरकर ला रहीं थीं, जिनसे राव ने संकेत करके पानी माँगा, किन्तु अंग्रेजों ने उन महिलाओं को भी पानी देने से रोक दिया। इसके बाबजूद एक साहसी महिला ने अपूर्व साहस और देशभक्ति का परिचय देते हुए अपना पानी भरा घड़ा राव के मुँह से लगा दिया, तब राव की प्यास तृप्त हो सकी थी।

राम भोपाल सिंह के बलिदान ने उस क्षेत्र के जाटों तथा चौहान राजपूतों में आक्रोश और असन्तोष उत्पन्न कर दिया। उन्होंने इस घटना का प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से अंग्रेजी शासन के विरुद्ध पुनः विद्रोह करने का निश्चय किया। अपनी योजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने के लिए जाटों तथा चौहानों ने क्षेत्र के कृषकों से भी गंभीर मंत्रण की तथा उनके असन्तोष का लाभ उठाते हुए इस महान कार्य में उनसे सहयोग की अपील की। जून माह 1 18570 के मध्य में खैर क्षेत्र में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध पुनः विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। लगेसवां, गोंडा, तलेसरा, गहलोव गॉवों की जनता ने विद्रोही चौहानों तथा जाटों को पूर्ण सहयोग प्रदान किया था। विद्रोहियों ने सभी सरकारी भवनों को जलाकर राख के ढेर में परिवर्तित कर दिया। खजाने को लूट लिया गया। सदर कचहरी तथा तहसील के सभी अभिलेखों को जला दिया गया। विद्रोहियों ने तहसील के मुख्य एवं सुदृढ़ भवन को अलीगढ़ जनपद में विद्रोह का पूर्ण दमन होने के पश्चात् जिला प्रशासन ने सरकार की सहायता करने वाले जन-नेताओं और जमींदारों को पुरस्कृत किया था। इसके विपरीत उन लोगों को दण्डित किया गया था जिन्होंने या तो विद्रोह में प्रत्यक्ष तथा सक्रिय रूप से भाग लिया था, अथवा जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विद्रोहियों की सहायता की थी। ऐसे लोगों को दण्डित करने के उद्देश्य से अंग्रेज सरकार ने कठोर ओर दमनात्मक कदम

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उठाये थे। विद्रोह में भाग लेने वाले किसानों की जमीनों को जब्त कर लिया गया। खैर तहसील में 5810 एकड़ भूमि, सिकन्दराराऊ में 5566 एकड़ भूमि, कोल तहसील में 4969 एकड़ भूमि, इगलास तहसील में 3650 एकड़ भूमि, अतरौली तहसील में 1252 एकड़ भूमि तथा हाथरस तहसील में 1115 एकड़ भूमि को भू-स्वामियों से छीन लिया गया था। इतना ही नहीं, ऐसे भू-स्वामियों को बन्दी बनाकर जेल में भेज दिया गया।

इसके विपरीत अंग्रेज सरकार ने जिन लोगों को ब्रिटिश शासन के प्रति वफादारी दिखाने के बदले में पुरस्कृत किया गया था, उनमें हाथरस के राजा गोविन्दसिंह, मुरसान के राजा टीकम सिंह, अकराबाद के तेजसिंह व जवाहर सिंह सिकन्दराराऊ के देवीदास, बिसाना के सावन्त सिंह, छतारी के नबाब महमूद अली खाँ, भीकनपुर के दाऊद खॉ, गभाना के चन्दन सिंह, वीरपुर के हीरासिंह और सोमना के बलवन्त सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार अंग्रेज सरकार ने इस विद्रोह के पश्चात् पुरस्कार और दण्ड के सिद्धान्त का पालन करके अन्य क्षेत्रों की भाँति अलीगढ़ जनपद में भी 'फूट डालो और शासन करो' की नीति को सफलतापूर्वक लागू किया था। इसी नीति के माध्यम से चतुर अंग्रेजों सफलता प्राप्त की थी।

सम्पूर्ण घटनाक्रम का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् अलीगढ़ में विद्रोह की असफलता के निम्न कारण प्रतीत होते हैं -

(1) विद्रोही सैनिकों और क्षेत्रीय नेताओं को अलीगढ़ जनपद की जनता का वांछित सहयोग प्राप्त नहीं हो सका। विदेशी शासन, सैनिक शक्ति और आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से पूर्णतः सम्पन्न था। उसके विरूद्ध सफलता प्राप्त करने के लिए अलीगढ़ जनपद के सभी वर्गों की जनता द्वारा विद्रोहियों को संगठित रूप से अपना सहयोग और समर्थन प्रदान करना आवश्यक था। इसके विपरीत जनपद में ऐसे अनेकों क्षेत्र थे, जहाँ की जनता ने अपने आपको या तो विद्रोही गतिविधियों से दूर रखा, या विद्रोहियों के विरूद्ध सरकार को पूर्ण सहयोग प्रदान किया था।

जहाँ तक जन-सहयोग का प्रश्न है, यह बात उस क्षेत्र विशेष की जनता के बौद्धिक स्तर से अधिक सम्बन्ध रखती है। अलीगढ़ जनपद की अधिकांश जनता अशिक्षित थी। इस कारण वह अपने जमींदारों और भूस्वामियों की नीतियों का ही समर्थन करती थी। यही कारण है कि अलीगढ़ जनपद के जिन जमींदारों ने विद्रोहयों के विरुद्ध सरकार को सहयोग देने की घोषणा की थी, वहाँ की आम जनता ने भी उसी नीति को अपना समर्थन प्रदान किया था इस प्रकार विद्रोहियों को जनपद की सम्पूर्ण जनता का समर्थन और सहयोग प्राप्त नहीं हो सका। ऐसी स्थिती में विद्रोह का असफल होना स्वाभाविक था।

अलीगढ़ जनपद में विद्रोह के असफल होने का एक प्रमुख कारण यह था कि इस जनपद में विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए कोई सर्वमान्य नेता अस्तित्व में नहीं आ सका। वस्तुतः इस जनपद में विद्रोह का नेतृत्व अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नेताओं द्वारा किया गया था। उदाहरणार्थ खैर क्षेत्र में राव भोपाल सिंह, इगलास क्षेत्र में जाट नेता अमानी सिंह, अकराबाद क्षेत्र में मंगलसिंह और मेहताब सिंह, अतरौली क्षेत्र में रहीम अली व इस्माइल खां ने इस विद्रोह के समय अपने-अपने क्षेत्रों की जनता को नेतृत्व प्रदान किया था। किन्तु इन सभी नेताओं के मध्य आपसी एकता, संगठन, सहयोग और सामंजस्य का नितान्त अभाव बना रहा। यह

शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विद्रोहियों का दुर्भाग्य था कि उन्होंने संयुक्त रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध लड़ने के में कभी नहीं सोचा। अंग्रेजों ने इस कमी का पूरा लाभ उठाया और विद्रोहियों को अलग-अलग मोर्चों पर पराजित करने में सफलता प्राप्त कर ली।

(3) 1857 के विद्रोह के समय अलीगढ़ जनपद के जमींदारों में भी आपस में एकता नहीं थी। जमींदारों का एक वर्ग अंग्रेजी शासन का कट्टर समर्थक था। इन लोगों ने विद्रोह के समय अंग्रेज सरकार का पूरा समर्थन किया था और विद्रोह का दमन करने में तन, मन, धन से सरकार को पूर्ण सहयोग प्रदान किया था। इसके विपरीत जनपद के जमींदारों का एक भी वर्ग था जिसे अंग्रेजों के प्रति तनिक भी सहानुभूति नहीं थी। इन जमींदारों ने या तो स्वयं विद्रोह का नेतृत्व किया था, या विद्रोहियों को गुप्त रूप से अथवा खुले रूप से अपना सहयोग एवं समर्थन प्रदान किया था। अलीगढ़ जनपद के सैनिक तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाया और विद्रोह का दमन करने में उन्होंने अंग्रेजी शासन के समर्थक जमींदारों की शक्ति एवं क्षमता का भरपूर उपयोग किया था । यह विद्रोहियों का दुर्भाग्य था कि विदेशी सत्ता के समर्थन में उनके अपने ही भाइयों ने खुलकर भाग लिया था। फलस्वरूप विद्रोह का दमन करने में अंग्रेज सरकार को विशेष कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ था।

(4) अलीगढ़ जनपद में विद्रोहियों के पास आर्थिक और सैनिक साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थे। इसके अलावा विद्रोहियों के हथियार भी अंग्रेजों के हथियारों की तुलना में निम्न कोटि के थे। अधिकांश विद्रोहियों के पास तलवार और भाला ही प्रमुख हथियार थे जिनका प्रयोग उन्होंने अंग्रेज सैनिकों के विरूद्ध किया था। अंग्रेजी सेना के पास नवीनतम रायफिलें और उच्चकोटि का तोपखाना था। इस सैनिक शक्ति के समक्ष विद्रोहियों का टिकना असम्भव हो गया था।

(5) अंग्रेजों के पास सैन्य बल बहुत अधिक था। इसके अतिरिक्त अलीगढ़ जनपद के सैन्य अधिकारियों को समय-समय पर झाँसी, ग्वालियर, कानपुर, आगरा आदि स्थानों से भी आवश्यकतानुसार सैन्यबल सहायता के रूप में उपलब्ध कराया गया था। इसके विपरीत अलीगढ़ जनपद के विद्रोहियों को किसी निकटवर्ती जनपद की जनता और जन नेता ने किसी प्रकार का सहयोग प्रदान नहीं किया था इस प्रकार अपर्याप्त सैन्यबल भी एक प्रमुख कारण था जिसने अलीगढ़ में अंग्रेजी सत्ता के वि 1857 के विद्रोह को सफल नहीं होने दिया।

(6) अलीगढ़ जनपद की शिक्षित जनता ने भी अपने क्षेत्र के विद्रोहियों को विशेष सहयोग प्रदान नहीं किया था। यह एक कटु सत्य है कि शिक्षित जनता ने या तो अंग्रेजों का समर्थन और सहयोग किया अथवा वे विद्रोह से सम्बन्धित सम्पूर्ण घटनाक्रम में पूरी तरह तटस्थ बने रहे। आधुनिक इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षित वर्ग के सक्रिय सहयोग के बिना कोई भी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता। वास्तव में राजनैतिक विद्रोह की आधारशिला का निर्माण शिक्षित वर्ग ही करता है। परन्तु उस समय अलीगढ़ जनपद में शिक्षित वर्ग इस मामले में पूरी तरह तटस्थ और निष्क्रिय बना रहा। इस कारण अलीगढ़ जनपद में विद्रोह को अधिक समय तक जीवित रखने का आधार तैयार नहीं हो सका था।

(7) अलीगढ़ जनपद में विद्रोह का संचालन किसी एक सर्वमान्य नेता द्वारा नहीं किया गया था। जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नेताओं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ने अलग-अलग समय पर विद्रोह का नेतृत्व किया था। यदि सम्पूर्ण जनपद की जनता किसी एक अनुभवी और सुयोग्य नेता के नेतृत्व में विद्रोह करती तो अंग्रेजों के लिए संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। अंग्रेजों ने इस कमजोरी का भी भरपूर लाभ उठाया और उन्होंने विद्रोह का दमन करने में सफलता प्राप्त कर ली। विभिन्न क्षेत्रों के जमीदारों ने विद्रोह के समय अपने आपको नेता घोषित करके यह सिद्ध कर दिया था कि अलीगढ़ का विद्रोह एक नेतृत्वविहीन विद्रोह था जिसकी न तो कोई निश्चित दिशा थी और न कोई योजना।

निष्कर्ष

कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु: अन्त में अलीगढ़ जनपद में 1857 के विद्रोह के सम्बन्ध में निम्नलिखित कुछ अन्य बिन्दु भी महत्वपूर्ण तथा विचारणीय हैं :

(1) अलीगढ़ जनपद मुख्यालय पर विद्रोह की सूचना 12 मई, 1857 को प्राप्त हुई थी। उस समय अलीगढ़ के जिला मजिस्ट्रेट मि. वाट्सन ने यह दावा कियाथा कि उनके जनपद में शान्ति व्यवस्था की स्थिति अत्यन्त संतोषजनक थी। सम्पूर्ण जनपद में शान्ति एवं सौहार्द का वातावरण मौजूद था। मि० वाट्सन के अनुसार विद्रोह से पूर्व के कुछ वर्षों में अलीगढ़ जनपद के प्रत्येक क्षेत्र में जितना विकास हुआ था, उतना विकास पहले कभी नहीं हुआ। वाट्सन के इस दावे के आधार पर ही अंग्रेजों को यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि अलीगढ़ जनपद की जनता और देशी सैनिक विद्रोही गतिविधियों के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त रहेंगें। उन्हें यह भी विश्वास था कि अलीगढ़ की जनता अंग्रेजों के शासन से पूरी तरह सन्तुष्ट थी। किन्तु 1857 के विद्रोह से सम्बन्धित घटनाओं ने मि.वाट्सन और अन्य अंग्रेज अधिकारियों की इस धारणा को पूरी तरह असत्य सिद्ध कर दिया। 20 मई 1857 को ब्राहमण जमींदार को सार्वजनिक रूप से फाँसी देने की घटना के विरोध में स्वरूप अलीगढ़ स्थित नौ नम्बर की पलटन के सैनिकों ने जिस ढ़ग से अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध विद्रोह का विस्फोटा करके जनपद में विद्रोह का अग्रदूत बनने का श्रेय प्राप्त कर लिया, उसे देखकर सभी अंग्रेज अधिकारी स्तब्ध रह गये।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अबुल फजल - आइन-ए-अकबरी (गैरेट एण्ड सरकार संस्करण) खण्ड एक से तीन कलकत्ता, 1949

2 इलियट एण्ड डाउसन - द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड वाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स (सम्पूर्ण आठ खण्ड), इलाहाबाद, 1964

3 ई. रॉबर्ट्स - फोर्टी वन ईयर्स इन इण्डिया, भाग एक तथा दो, लन्दन, 1897

4 ई. टॉमस - क्रांनिकल्स ऑफ द पठान किंग्स ऑफ देहली, लन्दन, 1871

5 एडवर्ड स्टेनफोर्ड, कॉलेज ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट, कलकत्ता, 1857

6 जस्टस मेकार्थी, हिस्ट्री ऑफ अवर टाइम्स, जिल्द तीन, लन्दन, 1915